Rural Studies (RM&D)
Patna University
Semester-I

Indian Rural Society & Rural Administration
Course/ Paper Code:-CC-1 Unit-3-C-
Gandhian Thought on Gramoday and Sarvoday

(E-content)

Dr. Shashi Gupta
Assistant Professor (Guest Faculty)
P.G. Department of Rural Studies (RM&D)
Patna University
Mobile No.:9472240600
Email: drsgupta01@gmail.com

ग्रामोदय और सर्वोदय की अवधारणा

गांधी जी ने भारत के गांव में रहने वाले निर्धन जन समुदायों के लिए ग्रामोदय और सर्वोदय की परिकल्पना की थी। जो मानवता के समग्र विकास को समेटे हुए है। ग्रामोदय एवं सर्योदय के प्रयास से बेहतर व खुशहाल भविष्य की रूपरेखा तैयार कर चिरस्थायी समाज के निर्माण का मौका देता है। आगे हम ग्रामोदय और सर्वोदय के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करने की कोशिश किए है।

ग्रामोदय: गांधीजी का कहना था कि अगर गांव नष्ट हो जाएं, तो हिंदुस्तान नष्ट हो जाएगा। भारतीय गांव उतने ही पुराने हैं जितना की यह भारत पुराना है। शहरों को विदेशी आधिपत्य ने बनाया है। जब यह आधिपत्य मिट जाएगा तब शहरों को गांव के भरोसे रहना पड़ेगा।आज तो शहरों का बोलबाला है और वे गांव की सारी दौलत खींच लेते हैं। इससे गांव का ह्रास और नाश हो रहा है। गांधी जी की ग्रामोदय की कल्पना यह थी कि ऐसा पूर्ण प्रजातंत्र होगा, जो अपनी महत्व की जरूरत के लिए अपने पड़ोसी पर निर्भर नहीं करेगा और बहुत ही दूसरी जरूरतों के लिए जिनमें दूसरों का सहयोग अनिवार्य होगा, सभी ग्रामीणों से उसे परस्पर सहयोग से पूरा करेंगे। इस तरह हर एक गांव का पहला काम यह होगा कि वह अपनी जरूरत का सारा अनाज और कपड़े के लिए कपास खुद पैदा कर ले। गांव के पास खाली पड़ी जमीन पर चारागाह की व्यवस्था हो जहां जानवर चर सके, गांव के बड़े व बच्चों के लिए मनबहलाव के साधनों और खेलकूद के मैदान का बंदोबस्त हो सके। इसके बाद ही जमीन बचे तो उसमें ऐसी उपयोगी फसल बोए जिससे वे आर्थिक लाभ उठा सकें। हर एक गांव में गांव की अपनी एक नाटकशाला, पाठशाला और सभा भवन रहे। पीने के पानी की अपनी व्यवस्था रहे। जिससे गांव के सभी लोगों को शुद्ध पानी मिला करेगा। कुंआ और तालाबों पर पूरे गांववालों का नियंत्रण रहे। बुनियादी तालीम तक समाज के आखिरी व्यक्ति की पहुंच होगी। जहां तक हो सकेगा, गांव के सारे काम सहयोग के आधार पर किए जाएंगे। जात-पात और क्रमागत अस्पृश्यता के जैसे भेद आज हमारे समाज में पाए जाते हैं, वैसे इस ग्राम-समाज में बिल्कुल न रहेंगे। सत्याग्रह और असहयोग के शास्त्र के साथ अहिंसा की सत्ता ही ग्रामीण समाज का शासन बल होगी। गांव की रक्षा के लिए ग्राम सैनिकों का एक ऐसा दल रहेगा, जिसे आवश्यकता पड़ने पर बारी-बारी से गांव की चौकी-पहरे का काम करना होगा। इसके लिए गांव में ऐसे लोगों को रजिस्टर् रखा जाएगा। गांव का शासन चलाने के लिए हर साल गांव के पांच आदमियों की पंचायत चुनी जाएगी। इसके लिए नियमानुसार एक खास निर्धारित योग्यता वाले गांव के बालिग स्त्री पुरुषों को अधिकार होगा कि वे अपने पंच की लें। इन पंचायतों को सब प्रकार की आवश्यक सत्ता और अधिकार रहेंगे। यह पंचायत अपने एक साल के कार्यकाल में रंग ही धारा सभा, न्याय सभा और व्यवस्थापिका सभा का सारा काम संयुक्त रूप से करेगी। आज भी अगर कोई गांव चाहे तो अपने यहां इस तरह का

प्रजातंत्र कायम कर सकता है। उसके इस काम में मौजूदा सरकार भी जी ज्यादा दखलंदाजी नहीं करेगी। हर एक ग्रामीण के जीवन का सबसे बड़ा नियम यह होगा कि वह अपनी और अपने गांव की इज्जत की रक्षा के लिए मर मिटे। इतना ही नहीं गांधी जी ने उपरोक्त बातों की सहायता से गांवों के विकास की साथ ही आदर्श गांव की कल्पना की जो इस प्रकार से है।

आदर्श भारतीय गांव इस प्रकार बसाया और बनाया जाना चाहिए, जिससे वह सभी लोग संपूर्णतया निरोग रह सके। उनके झोपड़ों और मकानों में प्रकाश की पूरी व्यवस्था तथा हवादार हो। मकान निर्माण के लिए आवश्यक कच्चे माल पांच मील की सीमा के अंदर उपलब्ध हो। हर मकान के आसपास या आगे पीछे इतना बड़ा आंगन हो जिसमें गृहस्थ अपने लिए साग भाजी लगा सके और अपने पशुओं को रख सके।गांव की गलियों और रास्तों पर जहां तक हो सके, धूल न हो। अपनी जरूरत के अनुसार गांव में कुंए हो, जिसका प्रयोग पूरा गांव करें। सबके लिए प्रार्थना घर या मन्दिर हो, सार्वजनिक सभा वगैरह के लिए एक अलग स्थान हो, गांव की अपनी चारागाह की भूमि हो, सहकारी ढंग की गौशाला हो, ऐसी प्राथमिक और माध्यमिक शालाएं हो जिनमें पढ़ाई के साथ साथ दस्तकारी की भी शिक्षा दी जाए। गांव के अपने मामलों का निपटारा करने के लिए एक ग्राम पंचायत भी हो। अपनी जरूरतों के लिए अनाज, साग भाजी, फल, खादी के वस्त्र खुद गांव में ही पैदा हो। यातायात के साधन हो, रेलवे और डाकघर की भी व्यवस्था हो।

सर्वोदय: गांधीजी की जनकल्याण और सबके हित की भावनाओं को गुंजित करने वाला शब्द था 'सर्वोदय'। ग्रामीण समाज का पुनर्निर्माण करने एवं समस्याओं से मुक्ति दिलाने के लिए भारतीय संस्कृति एवम् आदर्शों के अनुकूल गांधी जी ने अभूतपूर्व सर्वोदय कार्यक्रम पेश किया।

सर्वोदय शब्द गांधी जी की देन है जो उन्होंने पर्याप्त विचार मंथन के बाद प्रयुक्त किया। यद्यपि इस शब्द का प्रयोग प्राचीन जैन आचार्यो द्वारा हमें अनेक स्थानों पर मिलता है। परन्तु गांधीजी ने जिस प्रेरक शक्ति के रूप में इस शब्द का प्रयोग किया, वह एक नवीनता लिए हुए हमारे सामने आया। सर्वोदय का शाब्दिक अर्थ है 'सबका उदय' अर्थात 'सबका विकास'। गांधीजी वास्तव में सच्चे समाजवादी और उससे भी आगे बढ़कर मानवतावादी थें। वह चाहते थे कि संपूर्ण समाज का उदय हो, संपूर्ण मानवता विकसित एवं प्रस्फुटित हो। वह वर्गवादी नहीं थे। एक वर्ग संपन्न हो, दूसरा वर्ग शोषित यह उन्हें सहनीय न था।

गांधीजी का अटूट विश्वास था कि समाज का विकास और जनकल्याण तभी संभव हो सकता है, जब समाज का प्रत्येक व्यक्ति उसी प्रकार व्यवहार करें, जैसे वह अपने परिवार और अपने घर में करता है। जिस परिवार में वस्तु एक की नहीं होती, परिवार के सभी सदस्य उनका उपयोग करते हैं, उसी प्रकार समाज में एकाधिकारी प्रवृत्ति की भी समाप्ति होनी चाहिए। जिस प्रकार परिवार का हरेक सदस्य अपनी योग्यतानुसार श्रम करता है, ताकि उसका परिवार और घर सुखी व संपन्न बने, उसी प्रकार समाज के प्रत्येक सदस्य को अपनी योग्यतानुसार पूरे मन से सामाजिक उन्नति संबंधी कार्यों में योग देना चाहिए। जिस प्रकार परिवार में सुमति और प्रेम, सहयोग और

सहनशीलता से काम लिया जाता है वैसा ही आधार और व्यवहार समाज के लिए भी वांछनीय है। मतभेद होने पर लाठी और डंडे का सहारा लेना एक दूसरे का बुरा चाहना, सामाजिक शांति लाने में कदापि सहायक नहीं हो सकता। जिस प्रकार परिवार में श्रम बेचा और खरीदा नहीं जाता, उसी प्रकार समाज में भी श्रम खरीद कर उसके साथ शोषण की भावना का बहिष्कार आवश्यक है। दूसरी ओर जिस प्रकार परिवार में सभी सदस्यों की आवश्यकताओं का ध्यान रखा जाता है, उसी प्रकार समाज में रहने वाले सभी व्यक्तियों की न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति का ध्यान रखना समाज और राज्य का कर्तव्य हो जाता है।

सर्वोदय के उद्देश्य, आदर्श एवं सिद्धांत इस प्रकार है

- सर्वोदय उन माध्यमिक मूल्यों की स्थापना करना चाहता है जो सार्वभौमिक, सर्वकालिक एवं सर्वव्यापक है।
- सर्वोदय समाज के शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से अक्षम,अपंग एवं कमजोर लोगों का कल्याण चाहता है।
- सर्वोदय मानव में विद्यमान शारीरिक एवं मानसिक क्षमता का पूर्ण विकास करना चाहता है।
- सर्वोदय समाज के सभी वर्गो, धर्मो, प्रजातियों एवं जातियों का कल्याण चाहता है। अन्य शब्दों में यह संपूर्ण समुदाय की भलाई की बात सोचता है।
- सर्वोदय दूसरों पर निर्भरता के स्थान पर आत्मनिर्भरता पर जोर देता है। इसका उद्देश्य प्रत्येक गांव को आत्मनिर्भर इकाई बनाना है।
- सर्वोदय एक ऐसे समाज के निर्माण पर जोर देता है जो वर्ग विहीन, जाति विहीन एवं शोषण विविन होगा, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति के लिए सर्वांगीण विकास के समान अवसर उपलब्ध होंगे तथा इसमें मानव द्वारा निर्मित विशेषताएं नहीं होगी प्राकृतिक विषमताओं को भी कम करने का प्रयास किया जाएगा। लोगों में परस्पर सदभाव, सहयोग एवं सहानुभूति होगी। मानव और मानव के बीच किसी प्रकार का भेद नहीं किया जाएगा।
- सर्वोदय सत्य और अहिंसा पर जोर देता है। किसी भी प्राणी को मन, वचन एवं कर्म से हानि नहीं पहुंचाई जानी चाहिए। सर्वोदय 'राजनीति' के स्थान पर 'लोकनीति' स्थापित करना चाहता है, जिसमें राज्य एवं कानून के नियंत्रण के स्थान पर आत्म नियंत्रण पर जोर दिया जाएगा तथा व्यक्ति पर शक्ति थोपी नहीं जाएगी
- सर्योदय राजनीतिक एवं आर्थिक शक्तिय के विकेंद्रीकरण पर जोर देता है। यह सत्ता को गांव में वितरण पर जोर देता है जिससे कि प्रत्येक गांव अपने आप में एक राज्य बने। लोगों में कार्य विभाजन बिना नौकरशाही प्रशासन के होगा जिससे कि शक्ति का केंद्रीकरण न हो।

- सर्योदय में प्राकृतिक साधनों का दोहन न कर मानव की आवश्यकता की पूर्ति को ध्यान में रखकर ही उनका उपयोग करने पर जोर दिया गया है।
- सर्वोदय मानव समाज की निस्वार्थ सेवा पर जोर देता है। समूह की निष्पक्ष सेवा सर्वोदय पद्धति का सार है। सर्वोदय में प्रत्येक व्यक्ति में यह भावना पैदा होगी कि वह समाज का सेवक है। सर्वोदय में अंतर्वैयक्तिक एवं अंतर अंतर्समुह विरोध नहीं पाया जाता, बल्कि यह माना जाता है कि जीवन में प्रतिस्पर्धा एवं संघर्ष के स्थान पर सहयोग एवं सामंजस्यहो।
- सर्वोदय का लक्ष्य राज्यहीन समाज की स्थापना करना है। राज्य एक कृत्रिम व्यवस्था है, यह मानव के लिए हानिप्रद है, व्यक्ति की स्वतंत्रता का विरोधी है और यह हिंसा में विश्वास करता है। सर्वोदय स्वशासन, स्वसंगठन, पारस्परिक सहयोग, समानता, स्वतंत्रता एवं भाई-चारे की भावना पर बल देता है।
- सर्वोदय में सरकार एकमत एवं स्वीकृति से चलेगी न कि बल से।
- इन्हीं सर्वोदयमुलक सिद्धांतों को व्यावहारिक रूप देने की सलाह गांधीजी ने भारत की तात्कालिक सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक वातावरण के संदर्भ में दी थी। वह पाश्चात्य आर्थिक सिद्धांतों मान्यताओं की अंधाधुंध नकल के पक्ष में नहीं थें। उनका कहना था कि प्रत्येक देश को अपना विकास अपनी भौगोलिक स्थिति, संस्कृति, सामाजिक मूल्यों, साधनों व दूसरे देशों के अनुभवों आदि के संदर्भ में करने की चेष्टा करनी चाहिए। और ऐसी राजनीतिक व आर्थिक व्यवस्था का विकास किया जाना चाहिए जो देश के लिए सर्वाधिक उपयुक्त हो। ब्रिटिशकालीन भारतीय की राजनैतिक व आर्थिक दासता को वे असत्य और हिंसात्मक मानते थें क्योंकि वह देश के विकास व जनकल्याण में बाधक थी। इसलिए उन्होंने देश के स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व किया। श्रम की महत्ता पर बल देने के लिए तथा ऊंच-नीच के भेद को मिटाने के लिए उन्होंने' हरिजन आंदोलन' चलाया, स्थानीय स्वालंबन के लिए पंचायत तथा ग्राम स्वराज की कल्पना की, बेरोजगारी की समस्या को दूर करने के लिए ग्रामोद्योग एवं कुटीर उद्योगों के विकास पर बल दिया और चरखे को इस विकास का प्रतीक माना। उन्होंने केंद्रीकरण की प्रवृत्ति को रोकने के लिए विकेंद्रीकरण का समर्थन तथा अत्यधिक मशीनीकरण का विरोध किया, क्योंकि ऐसा भारतीय अर्थव्यवस्था की तत्कालीन परिस्थिति के अनुकूल न था। उन्होंने कृषि भूमि पर अधिकार जोत करनेवाले का माना और पूंजीवादी प्रवृत्तियों पर आक्षेप किए।

इस प्रकार गांधी जी की ग्रामोदय और सर्वोदय की समग्र परिकल्पना को ग्रामीण विकास की दिशा में एक संभावना के रूप में देखने की आवश्यकता है।

सन्दर्भ

1. जे सी कुमारप्पा, इकनोमिकस ऑफ परमानेंस, अखिल भारतीय सेवा संघ प्रकाशन,**1958**
2. महात्मा गांधी समग्र
3. डॉ धीरज काकड़िया, महात्मा- ए ग्रेट कम्युनिकेटर, अहमदाबाद, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, **2016**
4. एम. के. गांधी, हरिजन,**1946**
5. एमके गांधी, हिंद स्वराज
6. गांधी विचार समागम, संपूर्ण कार्यवाही, **2019**, गांधी सार्धशती, शिक्षा विभाग बिहार सरकार